चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में अभिव्यक्त आधुनिक समस्याएँ

साहित्य किसी भी भाषा का हो या किसी देश का हो वह साहित्य अपने परिवेश अपने समाज की दास्तान बयान करता रहता है। भारतीय साहित्य भी अपने परिवेश समाज और परंपराओं का चित्रण करने में सटिक साबित होता है। क्योंकि हमारे यहाँ का साहित्य वास्तविकता की धरातल पर लिखा जा रहा है उदा. दलित साहित्य, आदिवासी साहित्य आदि।

हिंदी साहित्य में इससे भी आगे की परिस्थितियों तथा समस्याओं का भी अंकन हो रहा है। आज का समाज विज्ञानवादी और आधुनिकता का चोला पहने है। आधुनिकता की होड में हमें अनेक प्रकार की आधुनिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और इसी आधुनिक समस्याओं का चित्रण हिंदी साहित्य के अनेक रचनाकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। रचनाकार चित्रा मुद्‌गल ने अपने कथा-साहित्य में आधुनिक समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

महिला लेखिकाओं में चित्रा मुद्‌गल यह आधुनिक जन-जीवन की समस्याओं का लेखा-जोखा इनके कथा साहित्य में हमें वास्तविक रूप से मिलता है। विषय वस्तुकी दृष्टी से इनका सृजन धार्मिक विस्तृत और विविधता से संयुक्त है। समकालीन जीवन के सभी सम विषय पक्ष उनकी रचनाओं में समाविष्ठ है। आस्था, आक्रोश, आत्मलोचन, प्रेमानुभूति में सामाजिक चिंतन, विसंगती बोध, नगर बोध, आँचलीकता, बालसंवेधना, युवा आक्रोश, वृद्ध समस्या, नारी समस्या, मजदुरों की समस्याओं का वास्तविक चित्रण अंकित हुआ है। ‘आवां’, ‘गिलिगडु’ और ‘एक जमीन अपनी’ इस उपन्यासों में आधुनिक समस्याओं का

यथार्थ चित्रण किया है और इसी कारण चित्रा मुद्‌गल हिंदी साहित्य में अपनी अलग पहचान लिए दिखाई देती है।

विषय का पूर्वविंहगावलोकन

अनुसंधान का पूर्व विहंगावलोकन करने के उपरांत यह ज्ञान हुआ कि चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य पर एम.फिल. एवं पीएच.डी. का कार्य हो रहा है और कुछ विषयों कों लेकर हो चूका है।

इस शोध विषय को निश्चित करने से पूर्व यह सतर्कता से देखा गया कि प्रस्तुत विषय पर अब तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ और सद्‌य काल तक यह विषय अछुता रहा। चित्रा मुद्‌गल के कथा-साहित्य में आधुनिक समस्याओं को लेकर किसी भी प्रकार का शोध कार्य नहीं हुआ। अत: मैने मेरे मार्गदर्शक प्रा.डॉ. संदीप पाईकराव सर से चर्चा की और बडे परिश्रम के उपरांत 'चित्रा मुद्‌गल के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त आधुनिक समस्याएँ' यह विषय सूनिश्चित हुआ।

विषय चयन की प्रेरणा

मुझे विषय चयन की प्रेरना मेरे गुरू मार्गदर्शक प्रा.डॉ. संदीप पाईकराव सर से मिली। जब मैं उनके पास पीएच.डी. के विषयों की सूची लेकर गया तो उन्होंने मुझे चित्रा मुद्‌गल का उपन्यास 'गिलिगडु' पढ़ने दिया। और करीब पंद्रह दिनों के बाद मुझे विषय के बारें में पुछा तो अनेक ज्वलंत समस्याओं का अंकन 'गिलिगडु' उपन्यास में हुआ है। तथा प्रा.डॉ. संदिप पाईकराव सर ने मुझे 'आंवा', 'एक जमीन अपनी' इन उपन्यासों में आधुनिकता और उनसे निर्माण होने वाली समस्याओं के बारे में बताया। मेरी रूची इस विषय में बढ़ी और इसी विषय को लेकर शोध कार्य करने का मैंने निश्चय किया।

‘चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में अभिव्यक्त आधुनिक समस्याएँ’ विषय के लिए मेरे मार्गदर्शक प्रा.डॉ. संदीप पाईकराव सर ने अत्यंत विचारपूर्वक और विषय के प्रति मेरा लगाव एवं अध्ययन देखकर इसी विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति दी।

o अनुसंधान का अनुमान :

संशोधन कार्य करने के पीछे कुछ अनुमान है।

(1) चित्रा मुद्‌गल के कथा-साहित्य का अवलोकन करना।

(2) चित्रा मुद्‌गल के कथा-साहित्य में आधुनिक समस्याओं को खोजना।

(3) चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में आधुनिक युग की समस्याओं का अनुसंधान करना।

(4) आधुनिक समस्याओं में महानगरीय, विज्ञापन जगत, वृध्दाश्रम आदि की समस्याओं का अनुसंधान करना।

o अनुसंधान का उद्‌देश्य :

किसी भी शोध कार्य का उद्‌देश्य उस शोधकार्य द्वारा प्राप्त अतिंम निष्कर्ष होता है। चित्रा मुद्‌गल आधुनिक युग की परिवर्तित नवचेतना की प्रतिनिधि रचनाकार है। चित्रा मुद्‌गल का कथासाहित्य वास्तववादी चरित्रों से बुना हुआ है। इन्होंने अपनी कहानियाँ सच्ची घटनाओं पर लिखी है। इनके कथासाहित्य में आधुनिक जीवन संघर्ष को बड़ी सटिकता से चित्रित किया है। हर वर्ग का मनुष्य इनकी रचनाओं का केंद्रबिंदू है। इनका साहित्य वास्तववादी धरातल पर लिखा है, इसी वजह से इनके साहित्य में आधुनिक युग और इस युग की समस्याओं का चित्रण दिखाई देता है। इसी को देखते हुए मैंने और मेरे आदरणीय गुरू प्रा.डॉ. संदीप पाईकराव सर ने ‘चित्रा मुद्‌गल के कथासाहित्य में अभिव्यक्त आधुनिक

समस्याएँ' यह विषय चुना है। इसी विषय के जो निष्कर्ष प्राप्त होंगे वही निष्कर्ष मेरे अनुसंधान का उद्देश्य है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इस अनुसंधान कार्य को पाँच अध्यायों में विभाजित किया जाएगा।

'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में अभिव्यक्त आधुनिक समस्याएँ'

प्रथम अध्याय : चित्रा मुद्गल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय : आधुनिकता का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

तृतीय अध्याय : चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में अभिव्यक्त आधुनिक समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय : चित्रा मुद्गल के कहानियों में अभिव्यक्त आधुनिक समस्याएँ

पंचम अध्याय : उपसंहार / निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

उपर्युक्त शोध कार्य का संक्षिप्त शोध प्रारूपन :

प्रथम अध्याय : 'चित्रा मुद्गल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

इस अध्याय को दो उपबंधों में विभाजित किया जाएगा। प्रथम उपबंध में चित्राजी का व्यक्तित्व है जिसके अंतर्गत चित्रा मुद्गल जी का जन्म, माता-पिता, बचपन, शिक्षा, दूसरे उपबंध में चित्रा मुद्गल जी का साहित्यिक परिचय दिया जाएगा। इसके अंतर्गत चित्रा मुद्गल जी के साहित्य सृजन के विविध आयामों के साथ-साथ उपन्यासकार के रूप में, कहानीकार एवं साहित्यकार के रूप में, अनुदित साहित्यकार के रूप में चित्रा मुद्गल की लेखन विषयक मान्यताएँ, उनको प्राप्त सम्मान और पुरस्कारों का विश्लेषण दिया जाएगा।

द्वितीय अध्याय : 'आधुनिक का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप'

इस अध्याय में आधुनिक शब्द का अर्थ व परिभाषा को पहले उपबंध में दिया जाएगा। दूसरे उपबंध में आधुनिकता के स्वरूप को स्पष्ट किया जाएगा एवं आधुनिक समस्याओं के स्वरूप को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

तृतीय अध्याय : 'चित्रा मुद्‌गल के उपन्यासों में अभिव्यक्त आधुनिक समस्याएँ'

इस अध्याय में चित्रा मुद्‌गल के उपन्यासों में अभिव्यक्त आधुनिक समस्याओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा। जैसे आवां, एक जमीन अपनी, गिलिगडु में अभिव्यक्त समस्याओं को उपन्यास के अनुसार अनुसंधान कार्य करने का प्रयास किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय : 'चित्रा मुद्‌गल के कहानियों में अभिव्यक्त आधुनिक सतस्याएँ'

इस अध्याय में चित्रा मुद्‌गल के कहानी संग्रह के माध्यम से आधुनिक समस्यांओं का अनुशीलन किया जाएगा। कहानियों में आधुनिक समस्याओं का चित्रण आदि-अनादि भाग 1, 2, 3 के माध्यम से करने का प्रयास किया जाएगा जैसे कहानियों में आनेवाली महानगरीय समस्या, नौकरी, बेकारी, आवास की समस्या, नगरीय नारी की समस्या, नौकरी पेशा वर्ग की समस्या, मॉडलिंग तथा विज्ञापन जगत में कार्य करनेवालों की समस्या आदि समस्याओं का अनुशीलन किया जाएगा।

पंचम अध्याय : निष्कर्ष / उपसंहार

इस अध्याय में समग्र शोध प्रबंध का सार रूप में निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा। चित्रा मुद्गल ने अपने कथा-साहित्य में आधुनिक समस्याओं की ज्वलंतता को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। यह स्पष्ट कर उनकी उपलब्धियों को प्रस्तुत किया जाएगा।

o अनुसंधान की पध्दतियाँ :

ज्ञान का क्षेत्र हो या विज्ञान का क्षेत्र हो उसकी प्राप्ति के लिए निरंतर नए-नए अविष्कार किए जाते है। और उन अविष्कारों के लिए विभिन्न शोध-पद्धतियों की आवश्यकता नुसार उपयोग किया जाता है।

साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न विषयों को लेकर शोध कार्य संपन्न हो रहे हैं। 'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में अभिव्यक्त आधुनिक समस्याएँ' यह विषय अत्यंत विस्तृत एवं व्यापक है। इसके लिए विभिन्न शोध पध्दतियों का प्रयोग किया जाएगा।

प्रस्तुत शोधकार्य स्वा.रा.ती.म. विश्वविद्यालय नांदेड के समय सीमा में रहकर ही पूरा किया जाएगा। तथा विश्वविद्यालय के नियमों के अधिन रहकर आवश्यकतानुसार स्थुल परिवर्तन किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

मुल ग्रंथ सूची

उपन्यास

(1) एक जमीन अपनी - चित्रा मुद्‌गल

(2) आंवा - चित्रा मुद्‌गल

(3) गिलिगडु - चित्रा मुद्‌गल

कहानी संग्रह

(1) आदि-अनादि भाग 1, भाग 2, भाग 3 चित्रा मुद्‌गल

सहायक ग्रंथ एवं पत्रिकाएँ

(1) कहानीकार मोहन राकेश - डॉ. भारती शेळके

(2) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र

(3) चिंत्रा मुद्‌गल के कथा-साहित्य का अनुशीलन - डॉ. गोरक्ष थोरात

(4) नई सदि के उपन्यास स.डॉ. नविनचंद लोहानी

o आजकल पत्रिका - प्रकाशन विभाग पटियाला हाऊस, नई दिल्ली

o शिखर - साहित्य स्मृति संस्थान, फैजाबाद

शोध निर्देशक

प्रा.डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव

इंदिरा गांधी वरिष्ठ महाविद्‌यालय,

सिडको, नविन नांदेड.

शोधकर्ता

संजय मारोतराव देशमुख